(iv) Need for take over by Government of the University College of Medical Sciences, New Delhi.

SHRI KAMLA MISHRA MADHUKAR (Motihari): Mr. Chairman, Sir, five hundred medical students of University College of Medical Sciences (Safdarjung Hospital) are on the roads because of decision of the Medical Council of India to derecognise the college.

The basic cause of this is the dual authority in U.C.M.S; the College is under Delhi University and the hospital under the Ministry of Health. Because of this, the hospital does not have designated staff to teach the students; no studies and examinations are being conducted.

To solve this, the medicos of U.C.M.S. are on indefinite strike since 30th March demanding the implementation of April 6 agreement signed by the Government with the medicos in 1979 after a 45-day strike. As per the agreement, the medicos are demanding the introduction of a Bill in the present Parliament session, effecting take-over of the college by the Health Ministry, which alone can and the dual authority of the college and start regular teaching.

The Government should bring the Bill for the take-over of the U.C.M.S.

(v) Drinking water problem of residents of DIZ area, New Delhi.

श्री अटल बिहारी बाजपेयी (नई दिल्ली) : श्रीमन्, मैंने दिनांक 23 फरवरी, 1981 को लोक सभा में नियम 377 के अंतर्गत डी. आई. ज़ैड क्षेत्र सैक्टर "सी" के निवासियों के पेय जल आपूर्ति की समस्याओं की ओर सरकार का ध्यान खींचा था।

इस संबंध में निर्माण तथा आवास एवं संसदीय कार्य मंत्री ने मुझे अप्रैल को एक पत्र भेजा है। पत्र में कहा गया है कि सारे मामले की जांच करवा ली गई है, किंतु पूरा पत्र पढ़ने पर ऐसा लगता है कि मंत्री महोदय ने उच्चस्तरीय जांच के बिना, नीचे के कर्मचारियों से प्राप्त जानकारी के आधार पर ही उत्तर दे दिया है।

यह कथन सही नहीं है कि 13 फरवरी, 1981 से 17 फरवरी, 1981 के बीच नई दिल्ली नगरपालिका से पानी की सप्लाई कम थी। यदि ऐसा होता तो इन पांचों दिनों निवासियों को पानी की कमी खलती, केवल 15 फरवरी को पानी न मिलना यह बताता है कि उसी दिन कोई गड़बड़ हुई था।

सचाई यह है कि 15 फरवरी को ब्लाक नं० 2, 4 तथा 10 को छोड़ कर शेष सभी ब्लाकों के ऊपरी टैंकों में पूरा पानी भरा था। यहां तक कि भूमिगत टैंकों के ऊपर पानी बह रहा था, इसका कारण पंप का न चलना था। टैंक के ऊपर पानी बहने की शिकायत बहुत पुरानी है और कई ब्लाकों में ऊपर पानी बहने के कारण सीलन फैलने की शिकायत होती रहती है। सैक्टर "सी" में पानी के वाल्व ठीक तरह से करे हुए नही हैं और इसलिए सैक्टर–"सी" के 12 ब्लाकों में से कुछ ब्लाकों के ऊपर टैंकों में पानी कम जाता है, तो कुछ ब्लाकों के टैंकों में इतना पानी जाता है कि पानी घण्टों तक बहने लगता है। इस संबंध में ब्लाक नं० 3, 5, 7, 8 का उल्लेख किया जा सकता है।

15 फरवरी को ब्लाक नं० 2 में सवेरे 7 बजे पानी बंद हो गया, यहां के निवासियों ने इसकी शिकायत वैलफेयर एसोसिएशन के प्रधान के पास की। बाद मे पता चला कि ब्लाक नं० 4 तथा 10 में भी पानी बंद हो गया है। पंप पर देखभाल के लिए तैनात कुछ कर्मचारियों ने भी

ऊपर जाकर देखा और टैंकों को खाली पाया ।

मंत्री महोदय का यह कथन है कि टैंकों के पानी में कोई मरी हुई छिपकली नहीं मिली, सत्य से परे है । यहां के निवासियों की मौजूदगी में जिस इंजीनियर ने टैंकों का मुआयना किया था उसने स्वयं अपनी आंखों से देखा था कि टंकी सूखी पड़ी है, उसमें मोटी कीचड़ जमी हुई है और अनेक मरी हुई छिपकलियां पड़ी हुई हैं । यहां के निवासियों ने 15 फरवरी को ही एक वक्तव्य पर हस्ताक्षर किए थे, जिसमें यह कहा गया था कि कनिष्ट इंजीनियर, हैवलाक स्क्वायर, सी०पी०डब्ल्यू०डी० इन्क्वायरी तथा अन्य दो वाल्वमैनों की उपस्थिति में टंकी की सफाई की गई और उसमें से कीचड़ तथा मरी हुई छिपकलियां निकाली गई । कनिष्ट इंजीनियर से घटना स्थल पर मौजूद नागरिकों ने वक्तव्य पर हस्ताक्षर करने के लिए कहा था, किंतु उन्होंने इन्कार कर दिया ।

मंत्री महोदय का यह आरोप कि यहां के निवासी पानी निकालने के लिए टंकी के ताले तोड़ देते हैं, निराधार है और कर्मचारियो द्वारा अपनी अक्षमता पर पर्दा डालने का प्रयास है । ब्लाक नं० 2 के अलावा पूरे क्षेत्र में कहीं ताले नहीं लगे हैं जब ताले लगे ही नहीं है तो उन्हें तोड़ देने का सवाल कहां से पैदा होता है ।

इस क्षेत्र में जल आपूर्ति को बढ़ाने के लिए ट्यूबवैल लगाने के आदेश दिए गए थे ; किंतु अभी तक उस पर अमल नहीं हुआ ।

सैक्टर "सी" की सफाई के लिए कोई जिम्मेदारी लेने को तैयार नहीं है । बस्ती को बसे हुए 5 वर्ष होने को आए किंतु अभी तक नई दिल्ली नगरपालिका को यहां की सफाई का काम नहीं सौंपा गया है । सी०पी०डब्ल्यू०डी० बस्ती की सीवर लाइन की ठीक प्रकार से देखभाल नहीं कर पाता, जिसका नतीजा यह होता है कि सारी बस्ती में गंदा पानी फैल जाता है । 8 अप्रैल, 1981 को इसी प्रकार गंदा पानी फैल गया और यहां के निवासियों को बड़ी असुविधा हुई । ब्लाक नं० 1, के पास तो गंदे पानी का छोटा-मोटा तालाब ही तैयार हो गया था ।

सैक्टर "सी" में एक पार्क लगाने की योजना थी । पता नहीं उस पार्क का क्या हुआ ? यहां जानवरों के चरने का मैदान बन गया है । गंदे पानी की निकासी के लिए छोटी-छोटी नालियां लगाने का काम भी खटाई में पड़ा हुआ है ।

मेरा आग्रह है कि मंत्री महोदय नीचे से मिली जानकारी के आधार पर इस सदन में उठाए गए मामले के उत्तर देने के अपने तरीके में परिवर्तन करें । इस क्षेत्र में केन्द्रीय कर्मचारी रहते हैं, उनकी कठिनाई वास्तविक कठिनाई है, उन्हे अपनी बात बढ़ा-चढ़ा कर कहने की आदत नहीं है । किन्तु यदि तथ्यो को भी छिपाने की कोशिश की जाएगी और कमियों को पूरा करने की बजाए उल्टा कर्मचारियों पर ही दोषारोपण किया जाएगा, तो यह बड़ा दुर्भाग्यपूर्ण होगा ।

(vi) *Andaman-Kakinada Pulp Mill* Project in East Godavari District.

SHRI SUBHASH CHANDRA BOSE ALLURI (Narasapur): Sir, I rise to make a special mention under Rule 377 as follows:

The pulp is in great demand these days. It is used as basic material for several paper industries. With the growing industrialisation, the need for pulp is being felt all the more. The